अध्यात्म और विज्ञान की नजर में 'पुनर्जन्म'

विज्ञान की पुरानी अवधारणा गलत साबित हो गयी कि शरीर ही मन है और शरीर के ही साथ मन का भी अन्त हो जाता है। आधुनिक कसौटियों और अनुभवों के आधार पर आत्मा और शरीर की भिन्नता के अनेकों प्रमाण मिल चुके हैं। आत्मा ही मन द्वारा मनन, बुद्धि द्वारा निर्णय लेकर जैसा कर्म शरीर द्वारा करती वैसे ही संस्कारों वाली कहलाती है। इसीलिये देवात्मा—धर्मात्मा—पुण्यात्मा—महातमा कहने में आता पर पुण्य शरीर—पाप शरीर, ऐसे नहीं कहा जाता है। शरीर छोड़ने के बाद भी आत्मा का अस्तित्व बना रहता है। शरीर न होते हुये भी आत्मा दूसरों के सम्मुख अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकती है। जैसे पितरों को भोग लगाना व भूत—वैताल का आह्वान करना।

मरने के बाद चेतना का क्या होता है इसका परीक्षण करने के लिये अमेरिकन वैज्ञानिकों ने विशेष प्रकार के चैम्बर बनाये थे। चैम्बर की भीतरी हवा बिल्कुल ही निकाल दी गयी। एक विशेष रासायनिक कुहरा पैदा किया गया, जिससे विशिष्ट कैमरों द्वारा चैम्बर के अन्दर की अणु हलचलों की भी फोटो ली जा सके। परीक्षण पहले चूहों पर किया गया। इसकी पहली पेटी में एक चूहा रख विद्युत करेन्ट से मारा गया। लगातार फोटो ली जा रही थी। अंतरिक्ष में उड़ते हुये की तरह आणविक चूहे की तस्वीर आ गई। मेंढ़क—केकड़ों पर किया गया प्रयोग भी ऐसा ही निकला। प्रत्येक प्राणी की आकृति की ही तरह आणविक चित्र प्राप्त होते रहे। अर्थात् विनाशी स्थूल शरीर ही नहीं प्रत्येक प्राणी का सूक्ष्म शरीर भी होता जो मरता नहीं। आधुनिक अन्वेषणों से ऐसे तथ्य और ही स्पष्ट होते जा रहे हैं। मरते हुये सैनिक की आत्मा निकलते समय शीशे के फूलप्रूफ बाक्स को प्रकाश की लहर के रूप में तोड़ कर बाहर निकल गई।

शारीरिक सत्ता तक ही आध्यात्मिक सत्ता सीमित नहीं है। शरीरों को नष्ट कर दिये जाने पर भी आत्माओं का अस्तित्व बना रहता है। वैज्ञानिक भी उसे विद्युत चुम्बकीय सत्ता समझ ऐसी ज्योति बताते जिसे आँखों से नहीं देखा जा सकता है। अनेक घटनाओं का उल्लेख मिलता है जिसमें अदृश्य आत्मायें जीवित मनुष्यों को ऐसे परामर्श तथा निर्देश दे गयीं जो परीक्षण के बाद बिल्कुल ही सत्य साबित हुये। ''डेथ एण्ड विजन्स'' पुस्तक के अनुसार मृत्यु की पूर्व सूचनाओं से लेकर अनेकों घातक घटनाओं से सावधान रहने की पूर्व सूचनायें समय से पहले ही मिल गयी थीं।

वैज्ञानिक हमारी कांशिकाओं को प्रोटोप्लाजमा नामक जीवित अणुओं से बना मानते हैं। प्रोटोप्लाज्मा का अन्तिम सबसे छोटा टुकड़ा जिसका खण्डन नहीं किया जा सकता, उसमें भी चेतना होती है। पर उसे साइटोप्लाज्मा कोशिका से काट देने पर मृत हो जाती है। अर्थात नाभिक के बारे में विज्ञान अपना अन्तिम निर्णय नहीं दे पाया है। भारतीय आध्यात्मिक ज्ञान तो इससे बहुत आगे है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने पर भी आत्मा में इतनी अनन्त ऊर्जा है कि सारी सृष्टि को भी माप सकती है। वैज्ञानिक, प्राणियों को सक्रिय परमाणुओं का समूह मानते हैं। पर इनको गति व अनुभूति देने वाला कौन ? यहाँ विज्ञान मौन धारण कर लेता है। भारतीय अध्यात्म यहाँ से आरम्भ होता है। आध्यात्मिकता कह रही है कि सभी कार्यों की प्रेरणा स्रोत आत्मा है। इसलिये आत्मा को सूक्ष्मता से समझना परम आवश्यक हो गया है। यह भी जानना जरूरी हो गया कि परमपिता परमात्मा भी क्या हम आत्माओं जैसा ही है ?

संसार के बहुत से लोग शरीर के साथ ही चेतना का उद्‌भव और मृत्यु के साथ अन्त हो जाना मानते हैं। निशदिन लाखों जन्म ले रहे तो मर भी रहे हैं। इस अटल सत्य को कैसे टाला जा सकता है। बोलने—सुनने—देखने व कर्म करने वाली पंछी के उड़ते ही कहते हैं ज्योति निकल गयी। इसी तरह शिशु के अन्दर हाथ पैर चलाने वाली सत्ता कहाँ से आयी ? आत्मा के निकलते ही शरीर जड़वत क्यों हो जाती है ? अर्थात चैतन सत्ता शरीर से भिन्न है। फिर शरीर छूटते ही वह कहाँ चली जाती ? और माँ के गर्भ में वह कैसे प्रवेश करती ? कोई—कोई बहुत फटेहाल घर में क्यों पैदा होते हैं ? बिना कारण तो कुछ हो नही सकता। ऐसे कारणों से सिद्ध होता है कि धनवान—निर्धन, रोगी—निरोगी, शिक्षित—अशिक्षित तथा नर वा नारी के रूप में मिला जीवन पूर्व जन्म में किये कर्मों का परिणाम है। जीवनकाल में किये कर्मों का फल भोग नहीं सके तो पुन: जन्म मिला है। कभी बच्चे तो तोतली भाषा में पूर्वजन्म के कर्मों का पूरा ही विवरण बता देते हैं। मृत्यु के कारणों को भी कह सुनाते हैं। बच्चों की किसी विषय में विशेषज्ञता से जाहिर हो जाता है कि यह पिछले ही जन्म से संस्कार लेकर आया है। बिना देखे—सुने—किये उत्पन्न हुई प्रतिभा पुनर्जन्म का प्रत्यक्ष प्रमाण है यदि कर्मों का परिणाम न माने तो हर कोई खाओ—पीयो—मौज करो के अनुसार हर किसी से मजा उड़ाने के लिये दूसरों को नुकसान ही पहुँचायेगा। इसलिये वर्तमान के साथ भविष्य के लिये भी अवश्य करते रहिये। क्योकि जैसे क्रिया की प्रतिक्रिया निश्चित रूप से होती वैसे ही कर्मों के फल को प्राप्त होने से कोई रोक नहीं सकता। तभी तो कहा है ''करम गति टारे नाहिं टरी''

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com